साहित्यिक मासिकी

प्राप्ति इंडिया

ISSN : 9334-0970

जनवरी 2025, मूल्य 50/-

संपादक
प्रसाद

साहित्यिक
मासिक पत्रिका

प्रान्ति इंडिया का वार्षिक सब्सक्रिप्शन

~~MRP ₹2500~~

आपके घर पर मात्र ₹1100 में

एक साल में 12 पत्रिकाएं

☎ +91 94535 35495

संपादक के बारे में

ये हैं ए. के. प्रसाद,

जिनका पूरा नाम आदित्य कुमार प्रसाद है। इनका जन्म 10 जनबरी सन् 2004 ई. को बिहार के सीवान में स्थित बगौरा में बैश्य परिबार में हुआ था। इनके पिताजी श्री प्रदीप प्रसाद और पितामह श्री जगदीश प्रसाद ब्यबसायी हैं। माताजी श्रीमती फुलबन्ती देबी गृहिणी हैं। इन्होंने शुरुआती शिक्षा गांव से प्राप्त करने के पश्चात काशी हिंदू बिश्वबिद्यालय (बीएचयू) से अपनी पढाई पूरी की। इनकी बाल्यकाल से हिन्दी साहित्य के अध्ययन में बिशेष रूचि का परिणाम सातवीं कक्षा में दिखने लगा। अपने शब्दचयन, भाषा, संबेदना की ताजगी और रचना बिन्यास में चौकस संधान जैसी बिशेषताओं के कारण उन्होनें हिंदी साहित्य के सुधी पाठकों का ध्यान आकृष्ट किया और देश के कोने कोने में कबि सम्मेलनों में जाकर कबिता सुनाकर सभी को आनंदित कर बाह-बाही लूटने लगे। ये अपने पिताजी के सानिध्य ब सहयोग से एक प्रकाशक के रूप में इक्कीसबीं सदी के तीसरे दशक में उदित हुए। इन्होंने साहित्य सेबा के उद्देश्य से सन् 2021 में प्रान्ति इंडिया की स्थापना की। इन्होंने कुछ दिन ब्यक्तिगत रूप से कार्यों का अनुभब लिया फिर एक अनुभबी बिषय-बिशेषज्ञों, लेखकों और संपादकों की प्रतिबद्ध टीम का गठन कर गहन शोध एबं बिश्लेषण के पश्चात् गद्य ब पद्य, दोनों में सर्जनात्मक लेखन प्रकाशित करना शुरू किया। अभी तक यह टीम 10 से अधिक पुस्तकें प्रकाशित कर चुकी है और प्रतिबर्ष लगभग 8-10 नई पुस्तकें प्रकाशित करने का इरादा रखती है। इस अनुभबी टीम में पीएच.डी., एम.ए., बी.एड. इत्यादि डिग्रीधारी बिशेषज्ञ शामिल हैं। इनका एकमात्र उद्देश्य अपने सर्बोत्तम ज्ञान, अनुभब ब प्रयासों को आपतक पहुँचाना है। प्रान्ति इंडिया की टीम द्वारा प्रदत्त आँकड़ों एबं तथ्यों को बिभिन्न मानक एबं प्रामाणिक स्त्रोतों का उपयोग कर तैयार किया जाता है। इनका सदैब यह प्रयास रहता है कि सरल ब सहज भाषा-शैली में आपके समक्ष प्रस्तुत हुआ जाए। प्रान्ति इंडिया के सदस्यों की एक मीटिंग में बिचार-बिमर्श हुआ कि बर्तमान परिबेश में प्रकाशन ब्यबसाय की ब्यबस्था कितनी बिस्तृत ब महंगी हो गयी है। आजकल तो लेखक बनने की इच्छा रखने बाले हर रचनाकार का शुरुआती मन इस दुबिधा से जूझता ही है कि यात्रा का प्रारंभ किस प्रकार किया जाए ? सबसे पहले किस प्रकाशक के पास जाया जाए ? यह कैसे सुनिश्चित किया जाए कि रचनाएं छप ही जाएगी ? यदि कहीं गलत जगह नबांकुर अपनी पांडुलिपि और पैसा देकर फंस गया तो फिर किसी और प्रकाशक पर बिश्वास कर पुनः प्रयास करना उसके लिए मुश्किल हो जाता है। इन्हीं सब उधेड़बुन से निकालने के लिए प्रान्ति इंडिया के सदस्यों की सर्बसम्मति से ए. के. प्रसाद के संपादकत्व में मासिक साहित्यिक पत्रिका प्रान्ति इंडिया का जुलाई 2024 में शुभारंभ हुआ और यह निर्धारित किया गया कि इस पत्रिका का मुख्य उद्देश्य नबोदित रचनाकारों की रचनाओं का प्रकाशन कर नबांकुर के सृजनात्मक लेखन को प्रोत्साहित करना है। कोई भी, किसी भी उम्र का रचनाकार अपनी कबिताएं, ग़ज़लें, कहानियां, निबंध, एकांकी, नाटक, चित्रकला, आदि प्रकाशन-सामग्री अपने संक्षिप्त परिचय और एक फोटो के साथ कार्यालय में संपादक की ईमेल editor@prantiindia.com पर प्रत्येक महीने के 25 तारीख तक भेज सकते है।

संपादकीय

प्रिय पाठकों,

हिन्दी साहित्य की दुनिया में साहित्यकारों का योगदान अतुलनीय है। उनकी लेखनी से हमें नई दिशा मिलती है, नई सोच मिलती है, और हमारी संस्कृति को नई ऊंचाइयों पर पहुंचाने में मदद मिलती है। लेकिन आजकल, साहित्यकारों को उनके योगदान के अनुसार सम्मान नहीं मिलता। इसी कारण से, हमने सोचा था कि साहित्य के क्षेत्र में अच्छा करने वाले साहित्यकारों को राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित किया जाए। इस सम्मान से साहित्यकारों को न केवल उनके कार्य की मान्यता मिलेगी, बल्कि इससे वे और भी अधिक उत्साह से हिंदी साहित्य के लिए अपनी लेखनी जारी रख सकेंगे। साहित्यकारों को सम्मानित करने से हमारी संस्कृति और भाषा को भी मजबूती मिलेगी। गौरतलब है कि साहित्यकारों को सम्मानित करने के लिए केवल पैसों की जरूरत नहीं है। मजबूत इच्छा शक्ति और समर्थन भी उतना ही महत्वपूर्ण है। किसी भी कार्य को करने के लिए पैसों से कई गुना बढ़कर मजबूत इच्छा शक्ति कार्य करती है। यदि हम साहित्यकारों को सच्चे दिल से समर्थन दें और उनके कार्य की मान्यता दें, तो वे और भी अधिक अच्छा कार्य कर सकेंगे। आजकल, साहित्य के क्षेत्र में कई साहित्यकार अपनी लेखनी के लिए संघर्ष कर रहे हैं। उन्हें अपने कार्य के लिए समर्थन और मान्यता नहीं मिल पाती। इससे वे निराश हो जाते हैं और अपनी लेखनी बंद कर देते हैं। लेकिन यदि हम उन्हें समर्थन दें और उनके कार्य की मान्यता दें, तो वे और भी अधिक अच्छा कार्य कर सकेंगे। कुछ ही महीने पहले जारी हुई आमंत्रण सूचना के आधार पर भारतवर्ष से हजारों की संख्या में प्रविष्टियां प्राप्त हुई। प्रान्ति इंडिया की टीम द्वारा राष्ट्रीय सम्मान समारोह हेतु अपने स्तर पर आर्थिक रूप से जूझकर भी काफी तैयारियां और इंतजाम किए गए, जो सराहनीय है। बताते चले कि पिछले दिनों 10 जनवरी, शुक्रवार को मोक्ष की नगरी काशी में प्रतिष्ठित मासिक साहित्यिक पत्रिका प्रान्ति इंडिया को प्रकाशित करने वाली अंतरराष्ट्रीय संस्था प्रान्ति इंडिया एण्ड कम्पनी का वार्षिकोत्सव 2025 कार्यक्रम पूरे हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। यह कार्यक्रम हमारे लिए एक गर्व का अवसर था, जिसमें हमने अपने साहित्यिक और सांस्कृतिक मूल्यों को प्रदर्शित किया। कार्यक्रम के प्रति आप सबकी बढ़ चढ़कर हिस्सेदारी ने मेरे एकल संकल्प को पूर्ण करने में अहम भूमिका निभाई है। मैं आप सबकी उपस्थिति को प्रणाम करता हूं और आपके स्नेह और समर्थन के लिए हृदय से धन्यवाद देता हूं। आपकी उपस्थिति ने इस कार्यक्रम को एक यादगार और सफल आयोजन बना दिया है। आप सबके स्नेहाशीष में पल्लवित होकर हमें अच्छा लग रहा है। हमें उम्मीद है कि इस कार्यक्रम ने न केवल हमारे बीच के संबंधों को मजबूत किया है, बल्कि यह हमें आगे के लिए भी प्रेरित करेगा। गौरतलब है कि पिछले पांच सालों से प्रान्ति इंडिया हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। मासिक साहित्यिक पत्रिका प्रान्ति इंडिया में उत्कृष्ट लेखनी तथा नवोदित रचनाकारों को सदैव सम्मान व प्रोत्साहन मिलता रहा है और आगे भी मिलता रहेगा।

• ए.के.प्रसाद, संपादक

बनारस में हर्षोल्लास के साथ मनाया गया
प्रान्ति इंडिया वार्षिकोत्सव 2025

संपादकीय कार्यालय

बाराणसी जिले के मैदागिन में स्थित पराड़कर स्मृति भवन में 10 जनबरी, शुक्रबार को प्रान्ति इंडिया एण्ड कम्पनी का बार्षिकोत्सब 2025 कार्यक्रम धूमधाम से मनाया गया। इस मौके पर सम्मानित-पुरस्कृत होनेबाले सैकड़ों साहित्यकारों हेतु आबास और भोजन की व्यबस्था 9 जनबरी से 11 जनबरी तक आसपास के होटलों और गेस्ट हाउस में कराई गई थी। गौरतलब है कि कार्यक्रम में मंचस्थ संयोजक श्री ए. के. प्रसाद,अध्यक्ष डॉ काशिका श्रीबास्तब, मुख्य अतिथि डॉ लेखराज शर्मा, बिशिष्ट अतिथि डॉ राम कुमार झा, बिशेष अतिथि श्री रबि ऋषि तथा मार्गदर्शक श्री प्रदीप प्रसाद की महत्बपूर्ण भूमिका रही।

काशी में मिला 111 साहित्यकारों को प्रान्ति इंडिया साहित्य सम्मान 2025

संपादकीय कार्यालय

प्रान्ति इंडिया के बार्षिकोत्सब में राष्ट्रीय सम्मान समारोह के दौरान प्रतिमा यादब "पंखुड़ी" उत्तर प्रदेश, सौरभ भारद्वाज मध्य प्रदेश, प्रेम प्रकाश बिहार, डॉ सुपर्णा मुखर्जी तेलंगाना, अरुण बिष्णु गोडे महाराष्ट्र, डॉ ए के बिंदु केरल, डॉ अनिता पी एल केरल, डॉ के जयलक्ष्मी तमिलनाडु, डॉ प्रदीप कुमार सुरेश कळसकर, महाराष्ट्र, डॉ शंभु दयाल अग्रबाल ओड़िशा, एड देबेंद्र घनश्यामजी चौधरी महाराष्ट्र, डॉ गुरुदत्त गिरिधर सिंग राजपूत महाराष्ट्र, शिबण्णा मल्लप्पा हदिमुर कर्नाटक, डॉ राजीब कुमार सिसोदिया 'प्रद्योय' उत्तरप्रदेश, हरीराम कहार मध्यप्रदेश, दीपा गेरा उत्तर प्रदेश, रौली कुमारी बिहार, मीरा जैन मध्यप्रदेश, डॉ पल्लबी मिश्रा 'शिखा' दिल्ली, डॉ अखिलेश कुमार शास्त्री उत्तरप्रदेश, ज्योति श्रीबास्तब मध्यप्रदेश, श्रीप्रकाश सिंह अरुणाचल प्रदेश, रूपा सिंह राजस्थान, डॉ सुमन आनन्द उत्तर प्रदेश, डॉ मीनकेतन प्रधान छत्तीसगढ़, अबधेश कुमार सक्सेना मध्यप्रदेश, अंकिता दिल्ली, आशुतोष दिल्ली, सुषमा झा झारखंड, इंद्रजीत दूबे गुजरात, अरुणा अग्रबाल छत्तीसगढ़, कमला उनियाल उत्तराखण्ड, सुन्नी सिंह महाराष्ट्र, प्रियंका गोयल दिल्ली, डॉ नीलम 'बाबरा मन' दिल्ली, डॉ अभिषेक कुमार बिहार, अरुणप्रिय उत्तर प्रदेश, अच्युत उमर्जी महाराष्ट्र, डॉ बीरेन्द्र कुमार दूबे मध्यप्रदेश, डॉ अखिलेश कुमार उत्तरप्रदेश, संत कुमार शर्मा दिल्ली, सुभाष चन्द्रा उत्तर प्रदेश, इला कुमारी बिहार, डॉ अजब सिंह राजस्थान, भोला सागर झारखण्ड, डॉ शाम्भबी शुक्ला मिश्रा मध्यप्रदेश, कुमकुम कुमारी 'काव्याकृति' बिहार, बृन्दाबन राय सरल मध्यप्रदेश, डॉ गुलाबचंद पटेल गुजरात, मुकेश कुमार दुबे 'दुर्लभ' बिहार, डॉ प्रेमलता यदु छत्तीसगढ़, ज्योति जैन 'ज्योति' पश्चिम बंगाल, भगबती बिहानी राजस्थान, डॉ आरती लोकेश दुबई, निमिषा सिंघल उत्तर प्रदेश, शशिधर कुमार बिहार, अनिता बिहार, मनोज कुमार झा 'मनु' झारखण्ड, मुकेश जोशी 'भारद्वाज' उत्तराखंड, निकिता सुमन झारखंड, डॉ राजलक्ष्मी शिबहरे मध्यप्रदेश, डॉ शीला शर्मा छत्तीसगढ़, डॉ ब्रह्मदेब कुमार झारखंड, डॉ प्रभा मारोतीराब गायकबाड महाराष्ट्र, डॉ सरिता चौहान उत्तर प्रदेश, नीरज बर्मा झारखंड, पूनम लता झारखंड, डॉ गायत्री कोंपल 'चन्नाया' राजस्थान, डॉ किरण कुमारी झारखंड, अभिलाषा अग्रबाल 'आशाएं' उत्तर प्रदेश, बिबेक रंजन 'बिबेक' मध्यप्रदेश, अपूर्ब 'आकर्षक' कर्नाटक, सत्यम तिबारी 'बनारसी' उत्तर प्रदेश, मंजू जाखड़ हरियाणा, प्राची तिबारी 'छबि' मध्यप्रदेश, प्रफुल्ल कुमार पटनायक छत्तीसगढ़, प्रो. पंढरीनाथ पाटील 'शिबांश' महाराष्ट्र, प्रमोद झा उत्तर प्रदेश, डॉ हरिबंश शर्मा उत्तरप्रदेश, गौतम आनन्द बिहार, मनोरमा शर्मा 'मनु' तेलंगाना, नरेंद्र भूषण उत्तरप्रदेश, नीरज सिंह उत्तराखंड, कृष्ण कुमार कौशिक दिल्ली, लक्ष्मी अग्रबाल उत्तर प्रदेश, रमेश कुमार दीक्षित उत्तर प्रदेश, रमाशंकर चतुर्बेदी उत्तर प्रदेश, डॉ आदर्श प्रकाश जम्मू कश्मीर, आशा झा छत्तीसगढ़, रश्मि रामेश्वर गुप्ता छत्तीसगढ़, मांगन मिश्र 'मार्त्तण्ड' बिहार, डॉ अनिता सिंह छत्तीसगढ़, डॉ अनिता जठार महाराष्ट्र, अनिता आचार्य महाराष्ट्र, रतनलाल मैनारिया 'नीर' राजस्थान, नेहा चौरसिया असम, भोला शरण प्रसाद, उत्तर प्रदेश, दिनेश चंद्र जोशी उत्तराखंड, निप्ति शर्मा हरियाणा, डॉ संतोष सुभाषराब कुलकर्णी महाराष्ट्र, डॉ. राजेश भामरे महाराष्ट्र, बंदना मोदी गोयल हरियाणा, डॉ. नीलम हेमंत बीरानी महाराष्ट्र, अलीशा शेख छत्तीसगढ़, संबर्त कुमार 'रूप' छत्तीसगढ़, डॉ. अनु शर्मा दिल्ली, डॉ. कारुलाल जमडा ' कारुण्य' मध्यप्रदेश, धनंजय द्विबेदी 'फकीर' छत्तीसगढ़, डॉ. श्रीलेखा के. एन. केरल, सुनील शर्मा उत्तरप्रदेश, हेमा जोशी 'हिमाद्रि' उत्तराखंड, डॉ राम कुमार झा 'निकुंज' दिल्ली, बिनोद प्रसाद बिहार तथा आर्य भाषा पुस्तकालय नागरी प्रचारिणी सभा के पुस्तकालयाध्यक्ष आरुणि चंद्र सिंह ब प्रसिद्ध हास्य कबि दमदार बनारसी को प्रान्ति इंडिया साहित्य सम्मान 2025 से सम्मानित किया गया।

हिन्दी साहित्य की 51 कृतियों को मिला
प्रान्ति इंडिया पुरस्कार 2025

संपादकीय कार्यालय

प्रान्ति इंडिया पुरस्कार 2025 हेतु प्राप्त प्रविष्टियों के आधार पर चयनित 51 कृतियों में उत्तर प्रदेश से नरेंद्र भूषण की गीत संग्रह इन्द्रधनुष कैसे उगे, उत्तर प्रदेश से रमेश दीक्षित ऋषांक की गीत संग्रह धरोहर खण्ड 2, जम्मू कश्मीर से डॉ आदर्श प्रकाश की कहानी संग्रह रेड बुड जंगल, बिहार से मांगन मिश्र 'मार्त्तण्ड' की यात्रा साहित्य शिखरों की छाँब में, दुबई से डॉ आरती लोकेश की उपन्यास रोशनी का पहरा, दिल्ली से डॉ पल्लबी मिश्रा 'शिखा' की कबिता संग्रह इंद्रधनुष, झारखंड से मनोज कुमार झा 'मनु' की काव्य संग्रह प्रांजलि, पंजाब से डॉ लेखराज की कहानी संग्रह नई सुबह की तलाश, बिहार से आशुतोष की पुस्तक बकील साहब, बिहार से डॉ अभिषेक कुमार की कबिता संग्रह फूल मुस्कुराते हैं, दिल्ली से डॉ नीलम 'बाबरा मन' की काव्य संग्रह उलझी राहें, छत्तीसगढ़ से डॉ प्रेमलता यदु की कहानी संग्रह रंगोली रिश्तों की, उत्तर प्रदेश से निमिषा सिंघल की काव्य संग्रह एक स्वप्न चुरा कर लाना तुम, उत्तर प्रदेश से लक्ष्मी अग्रबाल की कहानी संग्रह अधूरा सफर, उत्तर प्रदेश से प्रतिमा यादब की काव्य संग्रह पंखुड़ियाँ, बिहार से मुकेश कुमार दुबे 'दुर्लभ' की काव्य संग्रह मुरझाए पुष्प, बिहार से कुमकुम कुमारी 'काव्याकृति' की काव्य संग्रह काव्य कुमकुम, पश्चिम बंगाल से ज्योति जैन 'ज्योति' की दोहा संग्रह धूप-छांब सी ज़िन्दगी, तेलंगाना से मनोरमा शर्मा 'मनु' की काव्य संग्रह जीबन के उस पार, उत्तर प्रदेश से रेशमा त्रिपाठी की काव्य संग्रह उत्पल, उत्तर प्रदेश से प्रमोद झा की काव्य संग्रह शब्दबाण कबिताएं, गुजरात से डॉ गुलाबचंद पटेल की शोध पुस्तक बैश्बिक परिपेक्ष्य में गांधीजी, बिहार से गौतम आनन्द की पुस्तक तुम अजनबी ही रहती, उत्तर प्रदेश से बृंदाबन राय 'सरल' की ग़ज़ल संग्रह गजलों का गुलशन, राजस्थान से भगबती बिहानी की लघु उपन्यास शालीनता भरी बहू शीतल, उत्तर प्रदेश से पं. रमाशंकर चतुर्बेदी 'आनन्द' की एक संकलन उरबतियाँ, छत्तीसगढ़ से डॉ शीला शर्मा की लेख संग्रह जीबन पथ पर बढ़ते चलो, उत्तर प्रदेश से डॉ महेन्द्र नाथ तिबारी 'अलंकार' की गीत संग्रह गीत रसाल, छत्तीसगढ़ से रश्मि रामेश्वर गुप्ता की कहानी संग्रह माँ, राजस्थान से रतनलाल मैनारिया 'नीर' की कहानी संग्रह गाँब की गलियों से शहर तक, मध्य प्रदेश से बिबेक रंजन 'बिबेक' की उपन्यास अभियान, मध्य प्रदेश से मीरा जैन की लेख संग्रह दीन बनाता है दिखाबा, उत्तर प्रदेश से सुभाष चन्द्रा की काव्य संग्रह कुकुरमुत्ते, हरियाणा से डॉ जोगेन्द्र कुमार की काव्य संग्रह अनुपमा, बिहार से शशि धर कुमार की काव्य संग्रह रजनीगन्धा, हरियाणा से मंजू जाखड़ की काव्य संग्रह काश! तुम मिल जाते, मध्य प्रदेश से हरीराम कहार की बाल उपन्यास चीखता महल, छत्तीसगढ़ से डॉ अनिता सिंह की उपन्यास स्बीकरण, मध्य प्रदेश से बिबेक रंजन 'बिबेक' की उपन्यास गुलमोहर की छांब, मध्य प्रदेश से बिबेक रंजन 'बिबेक' की कबिता संग्रह मैं सपन के सुमन चुनता, मध्य प्रदेश से बिबेक रंजन 'बिबेक' की उपन्यास नील नदी के काले साये, मध्य प्रदेश से बिबेक रंजन 'बिबेक' की उपन्यास लबलीन, महाराष्ट्र से अरुण बिष्णु गोडे की लेख संग्रह बर्षा, उत्तराखंड से हेमा जोशी 'हिमाद्रि' की काव्य संग्रह हिमालय आखर, दुबई से डॉ आरती लोकेश की लघुकथा संग्रह दूर्बादल, दुबई से डॉ आरती लोकेश की काव्य संग्रह प्रीत बसेरा, हरियाणा से मंजू जाखड़ की शायरी संग्रह रूह का रिश्ता, बिहार से डॉ अभिषेक कुमार की काव्य संग्रह रस्सा खेल, मध्य प्रदेश से मीरा जैन की लघुकथा संग्रह मीरा जैन की सदाबहार लघुकथाएं, मध्य प्रदेश से डॉ कारुलाल जमडा 'कारूण्य' की पुस्तक तुझे सब है पता मेरी माँ तथा झारखंड से डॉ ब्रह्मदेब कुमार की शोध पुस्तक डॉ अमरेन्द्र के काव्य में समकालीन यथार्थ को चांदी का सिक्का देकर पुरस्कृत किया गया।

पेंटिंग ऑफ द अंक

।।संपादक की कलम से।।

बनारस के दारानगर में रहने वाली 12 वीं की छात्रा सुश्री मान्या सिंह जी की कला की अप्रतिमता को देखकर लगता है कि वे अपने जीवन में रंगों को बहुत ही सुंदर तरीके से भरती हैं। आपके उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं।

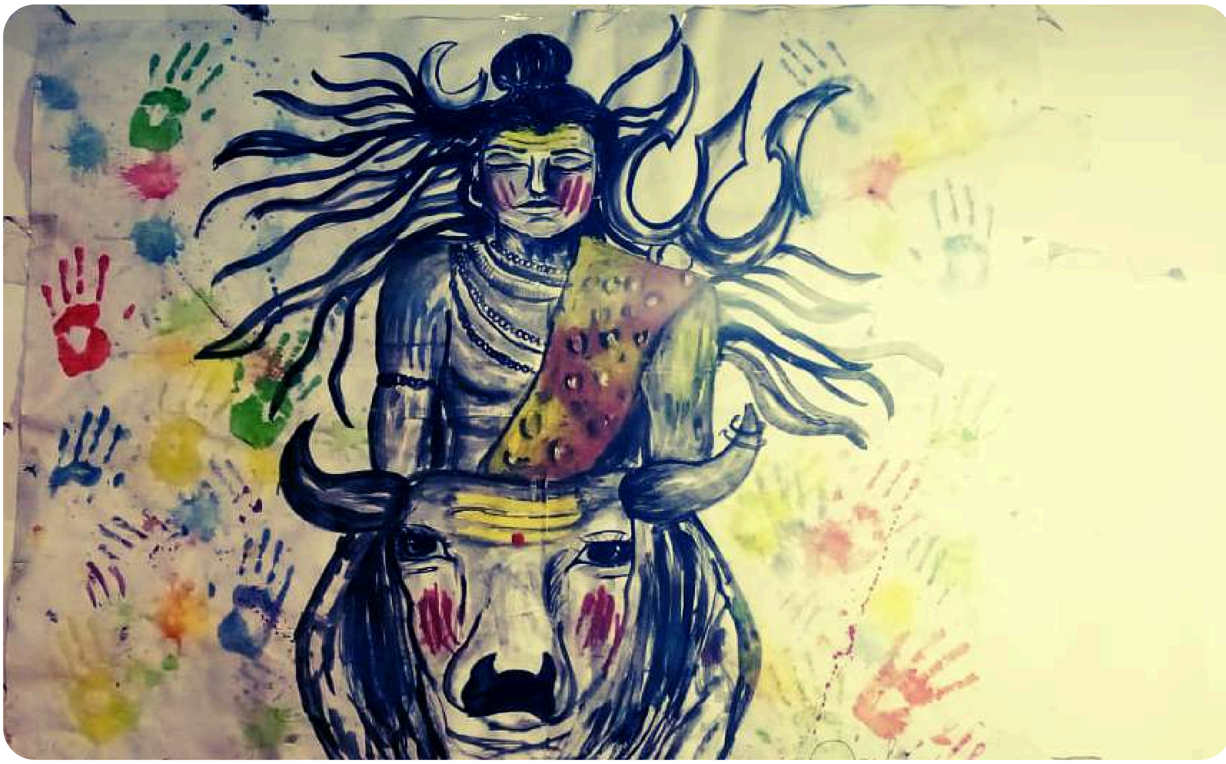

सोचता हूँ किस तरह

सोचता हूँ किस तरह इतना अकेला चल सका हूँ
लड़खड़ाया तो बहुत पर ,बिना गिरे मैं संभल सका हूँ।
अनदेखी अनजान दिशायें , बनी पंथ की अभिलाषायें ,
कुछ साथ रहीं ऐसी आभायें,जो दूर हटाती रहीं बलायें।
पथ नियति ने नियत किया, खुद को जानूं, जग पहचाने ,
अवसर कहाँ कहाँ से आये , बनकर के नित नये बहाने।

कभी न सर झुकने पाया है , जब तब पुरखों ने राह दिखाई ,
सब कुछ समझ में आता है अब , जो कहती उन पैरों की बिवाई।
कभी न हम बच्चों को भायी , दादा जी की फटी एड़ियां ,
कितना था त्याग समर्पण उनमें, आज जोड़ता हूँ वह कड़ियां।
बड़े जतन और लाड़ प्यार से,सिखलाया बायें ही चलना ,
कितना भी फुसलाये कोई, कभी न सच की राह बदलना।

मां ने ममत्व के भाव भरे ,आकाश पिता ने हृदय उतारा ,
अंधियारे पथरीले पथ पर , राह दिखाई बन ध्रुव तारा।
उत्सर्ग हुई हैं कर्म वेदी पर , बड़े बुजुर्गों की प्रतिभायें ,
नव पीढ़ी में वही गुणित हो, होती फलित सभी इच्छायें।
तभी तो कोई बना प्रदर्शक , अनजानों को राह दिखाता ,
और उतर कर भाव नदी में , कोई कविता में सुख पाता।

बन जाता कोई बड़ा खिलाड़ी , अभिनय में कोई रम जाता ,
कोई बहुत डूब कर गाता , अद्भुत रंग छटा बिखराता।
तब की बोझिल अभिलाषायें, अब लगता निर्भार हुई हैं ,
बरसों बरस संजो कर रखी , सब इच्छायें साकार हुई हैं।
संकल्प, प्रेरणा का संबल ले , पीढ़ी दर पीढ़ी आता है ,
सोपान नये अर्जित करने , हर सीढ़ी चढ़ जाता है।

तभी तो कहता हूँ थक कर भी, लगा नहीं कि कभी थका हूँ,
वे लुप्त रहे हर डगर थामते, तभी तो बरबस संभल सका हूँ।
यह लक्ष्य पूर्ति का उत्सव,रौनक उनकी तपस्याओं के फल हैं ,
अब उनको चैन मिला ही होगा, खुश हूँ किंतु नयन सजल हैं।

॥संपादक की कलम से॥

कविता की भाषा ही विचारों और भावनाओं को प्रकट करती है। इस कविता में कवि ने अपने जीवन के अनुभवों को बहुत ही सुंदर तरीके से प्रस्तुत किया है, जो पाठकों को अपने जीवन के बारे में सोचने पर मजबूर करता है।

विवेक रंजन 'विवेक'
☎ 7024173456

बनारस कहूँ कि काशी

गंगा के तीर - तीर
हर तरफ भीड़ - भीड़
पिघल रहा पीर - पीर
मन उड़ता फिर - फिर

हर जगह मिला गुरु - गुरु
सुमधुर घंटियाँ शुरु - शुरु
बेदना सारी मरू - मरू
संबेदना तरु - तरु

कदम - कदम कुंज - कुंज
हर हर महादेब की गूँज - गूँज
आत्म दिप्त पूँज - पूँज
बेद ऋचाओं की गूँज - गूँज

मनुष्य यहाँ भले - भले
मस्तक त्रिपुण्ड मले - मले
चेहरे सारे खिले - खिले
अंजान से भी हिले - मिले

पान में झौंस - झौंस
चटपटे चाट मसालों की धौंक - धौंक
कचौड़ी में हिंग की छौंक - छौंक
गुलाबजामुन , जलेबी , लता लौंग - लौंग

महामना की छांब तले
बिद्यार्थियों का हुजूम पले
हर छात्र - छात्रा देख रहे स्वप्न भले
कैम्पस की हर बलाएं बाबा की कृपा से टले

कहीं लड़कों की टोली कसती फबतियाँ
कहीं अल्हड़ अटखेलियों में मग्न युबतियाँ
कहीं मोक्ष की खातिर सारी युक्तियाँ
कहीं नहीं दिखता प्रयोजनों की रिक्तियाँ

||संपादक की कलम से||

आपने कविता में गंगा नदी का उल्लेख किया गया है, जो शहर की जीवनरेखा है। कविता में शहर के विभिन्न पहलुओं को दर्शाया गया है, जैसे कि इसकी सांस्कृतिक विरासत, आधुनिकता और पुरातनता।

गंगा का बिशाल पाट
अलग खासियत भरा चौरासी घाट
गली से लेकर घाट तक फैला हाट
बाजार में भी खुशबु बिखेरता हाट

दिखा हर तरफ समाजिक सद्भाब
भाबनाओं का नहीं अभाब
आधुनिकता के साथ पुरातन का प्रभाब
भिन्न - भिन्न संस्कृतियों का सहयोगी स्बाभाब

हर रस में डूबा मिला शहर बनारस
हिला - मिला , खिला - खिला शहर बनारस
गाँब की खुशबु बिखेरता शहर बनारस
मेरी नजरें भी धन्य हुई देख शहर बनारस ।

डॉ० अभिषेक, बिहार
☎ 9304664551

काशी की पहचान

शिव के त्रिशूल पर है बसा,
यह मेरी प्यारी काशी है।
जहाँ विराजें शिव वहीं
विश्वनाथ शिवधाम है।
जहाँ बहती नदियाँ अविनिशी,
यही मेरी प्यारी काशी है।
घाटों का दृश्य लुभावना,
अस्सी घाट है मनमोहक।
शिव की इस पावन नगरी का,
इतिहास बहुत पुराना है।
शिक्षा हो या चिकित्सा का,
हर क्षेत्र में काशी की अलग पहचान है।
चरक,सुश्रुत की धरा यह,
शल्यचिकित्सा आयुर्वेद के जनक थे।
हिन्दु काशी विश्वविद्यालय,
काशी का अभिमान है।
काशी की विद्वता की धारा
काशी की पहचान है।
कबीर,तुलसी,रैदास यहीं जन्में,
तुलसी ने रामचरितमानस की
शुरुआत यहीं पर की।
बिस्मिल्ला खाँ की शहनाई की इबादत,
भोले बाबा का दरबार रहा।
मोक्षदायिनी यह नगरी,
मोक्ष का द्वार है।
लेखक,कवि,संगीतज्ञ पंडित
सभी से परिपूर्ण है अपनी काशी।
पान बनारस का हो या हो बनारसी साड़ी,
सबसे प्यारी है यह काशी वाली।
देवगणों से देवों तक सबका रंजन,
यह बनारस करता सबका अभिनन्दन।

।।संपादक की कलम से।।

आपकी यह कविता काशी (वाराणसी) की सुंदरता और महत्व को बहुत ही सुंदर ढंग से प्रस्तुत करती है। आपने काशी के ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और धार्मिक महत्व को बहुत ही सुंदर शब्दों में व्यक्त किया है।

पूनम लता, नोएडा
☎ 9470932997

रिटायरमेंट: अवसाद या खुशी

।।संपादक की कलम से।।

यह लेख रिटायरमेंट के बाद के जीवन के बारे में है। लेखिका ने रिटायरमेंट के बाद के जीवन को एक नए दौर की शुरुआत के रुप में प्रस्तुत किया है, जहां व्यक्ति को अपने जीवन को नए सिरे से जीने का मौका मिलता है।

एक निश्चित आयु तक पहुंचने के बाद नौकरी छोड़ने या काम बंद करने की प्रथा को रिटायरमेंट कहा जाता है।

जीवन की बिभिन्न अबस्थाएं होती हैं- बाल्याबस्था, किशोराबस्था, युबाबस्था, प्रौढ़ अबस्था, बृद्धाबस्था- लगातार इन प्रारंभिक अबस्थाओं में आप प्रयास करते हैं, बिद्या अर्जित करते हैं अपनी योग्यता के अनुसार अपनी सेबाएं देकर अपने परिवार का भरण पोषण करते हैं।

यह सब करते हुए आप इतने ब्यस्त रहते हैं कि जब एक दिन आपसे - आपके कार्य स्थल पर यह कहा जाता है कि - आप आयु सीमा के उस स्तर पर पहुंच चुके हैं जहां आपको रिटायर किया जाता है, आपको इस संस्था से बिदाई दी जाती है तो अनजाने ही यह शब्द अबसाद का कारण प्रतीत होने लगते हैं क्योंकि संस्था में अपने अनुभबों की बृद्धि करते हुए आप संस्था को अपने जीवन का अभिन्न अंग समझ चुके थे।

और फिर.....फिर एक दिन - संस्था से बिदाई का बह आखिरी पल - ओह...

कितना घना और अभिभूत कर देने बाला पल!

जहां अधिकारी गण, मित्र, सहयोगी और कनिष्ठ बर्ग - सभी उत्साहित होकर आपको बिदाई दे रहे हैं, पूरी सेबा के दौरान जो नहीं दिया - बैसे अनमोल उपहार भेंट कर रहे हैं- परंतु आप... आप मानो- कलेजा मुंह को आ रहा है! सबके उत्साह भरे शब्द -

अंतर्मन के अबसाद को कम नहीं कर रहे अपितु आंखों में अश्रु धारा बनकर बाहर ही निकल जाने को तत्पर हैं...क्योंकि आपका कार्य, आपकी योग्यता, आपकी संस्था को दी गई उपलब्धियां- सब मानो - ब्यर्थ- कोई भी आपको आखरी सांस तक रुकने का आग्रह नहीं कर रहा।

आपको अब महीने का बेतन नहीं मिलेगा, आप पुन: बेरोजगार हो रहे हैं?

मन में एक ही बिचार - मंथन कर रहा है कि इस आयु में तो कोई और संस्था भी आपको कार्य पर रखना पसंद नहीं करेगी, इस मानसिक अबस्था में आप बिदाई पार्टी में मुस्कुराते हुए बिबश खड़े हैं!

जहां- कल तक एक छुट्टी लेने पर आपको बुलाकर पूछा जाता था- कल आप कहां थे? क्या हुआ?

पर आज... आज पार्टी और उपहार देते हुए कहा जा रहा है- कल से नहीं आना, आपको सेवा निवृत किया जा रहा है।

तब हृदय, नेत्र, कदम,भावनाएं- मानो कोई भी साथ नहीं दे रहीं।

आपको आपके वजूद से अलग किया जा रहा है- तब यह पल निश्चित ही अवसाद का वह पल है जो द्रोपदी के चीर और हनुमान की पूंछ के समान लंबा ही प्रतीत होता है।

ओह!- मुश्किल, कितना असंभव,

अश्रुपूरित - वह लंबा क्षण- जिसमें - अपने हृदय का धड़कना भी अपने साम्राज्य के छूटने जैसा प्रतीत होने लगता है।

आप सर्वस्व छोड़कर, अपनी नियमित दिनचर्या को भूलकर,अपनी इच्छा से जीना नहीं चाहते-

आपको अपनी संस्था की वह नियमित दिनचर्या पसंद आने लगी थी- पर उसे छोड़ना आपकी विवशता बन जाती है।

सभी सलाह देते हैं- घूमो - फिरो, पार्क जाओ,

इससे मिलो, उससे मिलो, पर कब?

क्योंकि बाकी सभी लोग तो अपनी-अपनी दिनचर्या और कर्तव्य पूर्ति में व्यस्त हैं ।

आप ही तो अकेले हैं,आप ही तो रिटायर हुए हैं।

परंतु- मेरे सभी रिटायर्ड साथियों-

रोते का सहारा कोई नहीं है, आप आर्थिक रूप से संपन्न हैं तो संस्थान के मोह को ईश्वर प्रेम से जोड़ दीजिए, चल- फिर सकते हैं तो देश-विदेश के पर्यटन स्थलों की सैर कीजिए और संस्था में दी जाने वाली सेवा को उन लोगों में बांट दीजिए जो आपकी तरह अकेले हैं।

जिन्हें आपकी जरूरत है, अनजाने लोगों से मिलकर खुशी ढूंढे और योग आसन करते हुए स्वस्थ, बंधन - रहित और मनमौजी जीवन का लुत्फ उठाते हुए स्वस्थ रहें, प्रसन्न रहें।

प्रेमलता चंदना, दिल्ली
☎ 9868176746

कंदील का मंद-मंद प्रकाश

।।संपादक की कलम से।।

लघुकथा का अंत बहुत ही भावपूर्ण है। जब सूरज अपनी माँ की गोद में सर रखकर रोता है और माँ उसे अपने सपनों को पूरा करने के लिए प्रेरित करती है। यह एक सुंदर और भावपूर्ण दृश्य है, जो पाठकों को अपने साथ जोड़ता है।

सूरज शून्य में खोया हुआ अपने भविष्य को सोच रहा था, उसकी आँखों में नजर आ रहा था एक खालीपन गहन , बसंत कि ऋतु चलते,तेज हवा चल रहीं थी ,सुखे हुए पत्ते पेड़ से गिर रहें थे जैसे बूढ़े जर्जर हुए शरीर को आत्मा छोड़कर चलीं जाती हैं कुछ वैसे ही ,उन पत्तों कि सरसराहट को और सन्नाटे को सूरज शांती से सुनता जा रहा था और उसकी सोच गहरी कुछ और गहरी होतीं दिखाई देने लगी ,माँ बाजु में ही चूल्हे पर रोटियाँ सेंक रही थी ,चूल्हे में धधक रहीं आग और सूरज के सोच कि आग दोनों एक दूसरे से एसी उलझती हुई नजर आ रही थी जैसे डूबता हुआ सूरज और उगता हुआ चाँद दोनों एक साथ नजर आ रहें हो ।

माँ रोटी सेंकती हुई अपने बेटे सूरज को ही निहार रही थी ,वह जान गई थी कि सूरज कुछ गहरी बात सोच रहा हैं ,माँ ने जैसे ही रोटियाँ सेंकना हो गया तो चूल्हे पर फिकी दाल छौंक दी और चूल्हे कि आग को बाहर खिंचकर बुझाते हुए सूरज को बोलने लगी ," क्या हुआ सूरज बेटे क्या सोच रहे हो ...."

सूरज अपने ही विचारों कि गहराई में डूबा हुआ था उसे उस विचारों कि गर्दी में माँ कि आवाज सुनाई नहीं दी । माँ ने थाली परोसी और सूरज के आगे रखते हुए कहा कि सूरज बेटे खाना खा लो ,तब सूरज ने माँ कि ओर देखा ...!

मटका जो एक कोने में ठंडी साँसों को भर रहा था उस मटके से माँ ने एक लोटा पानी का भरकर सूरज के सामने रख दिया और फिर से पूछा कि क्या सोच रहें हो ? तब सूरज ने माँ कि नजर से थाली पर नजर डालते हुए कहा कि देख मां मुझे प्रिसिंपल साहब कह रहें थे कि शहर से उच्च शिक्षा का बुलावा आया हैं मुझे जाना होगा लेकिन माँ मैं तुझे छोड़कर कंही पर भी नहीं जाऊँगा यंही गाँव में रहकर जो भी काम हाथ लगेगा वो मैं करूँगा लेकिन तुझे अकेला छोड़कर मैं शहर नहीं जाने वाला ,तब माँ ने सूरज से धीमी गंभीर भरी हुई आवाज़ में कहा कि,तुझे शहर जाना होगा उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए तेरे पिताजी का भी सपना था कि तू पढ़ लिखकर बड़ा अफसर बनें और गाँव का विकास करे ,सूरज तुझे शहर जाना हैं और उच्च स्तरीय शिक्षा प्राप्त कर सरकारी अफसर बनना ही हैं ,तू मेरी फिकर मत करना बेटा मैं मेहनत मजदूरी करूँगी तूझे पढाऊंगी मैं ,तू मेहनत कर पढ़ाई लिखाई करके कुछ बनकर गाँव तरफ वापस लौटकर आना मैं तुझे कुछ बनता हुआ देखना चाहती हूँ सूरज...!

माँ कि आशा और अभिलाषा से भरी आँखें सूरज ने देख ली थी ,सूरज ने थाली को बाजु में सरकाते हुए माँ कि गोद में सर रखकर वह कंदील के मंद-मंद जलते हुए प्रकाश कि ओर देख रहा था उसे उसके पिताजी कि धुंधली आकृति स्मित हास्य करती हुई नजर आई और उसने नम हुई अपनी आँखों पर पलकों कि चादर डाल दी इससे पहले कि नम हुई उसकी आंखें छलक जायें....

माँ निहारती रह गई थी उसी कंदील के मंद-मंद जलते प्रकाश में शिक्षा और ज्ञान से भरे हुए तेजस्वी जगमग ज्योति से चमकते हुए सूरज के चेहरे को ...

माँ एकटक निहार रहीं थी सूरज के तेजस्वी चेहरे को उसी मंद-मंद जलते हुए कंदील के प्रकाश में....

शुभांगी मगन सिंह
☎ 8766793460

बिहार की बाटी

||संपादक की कलम से||

बाटी-चोखा व्यंजन भारतीय संस्कृति और पारंपरिक जीवनशैली का हिस्सा है। इसे गरीब और अमीर सभी वर्ग के लोग पसंद करते हैं। शादी, त्योहार और पारिवारिक समारोहों में इसका विशेष महत्व है।

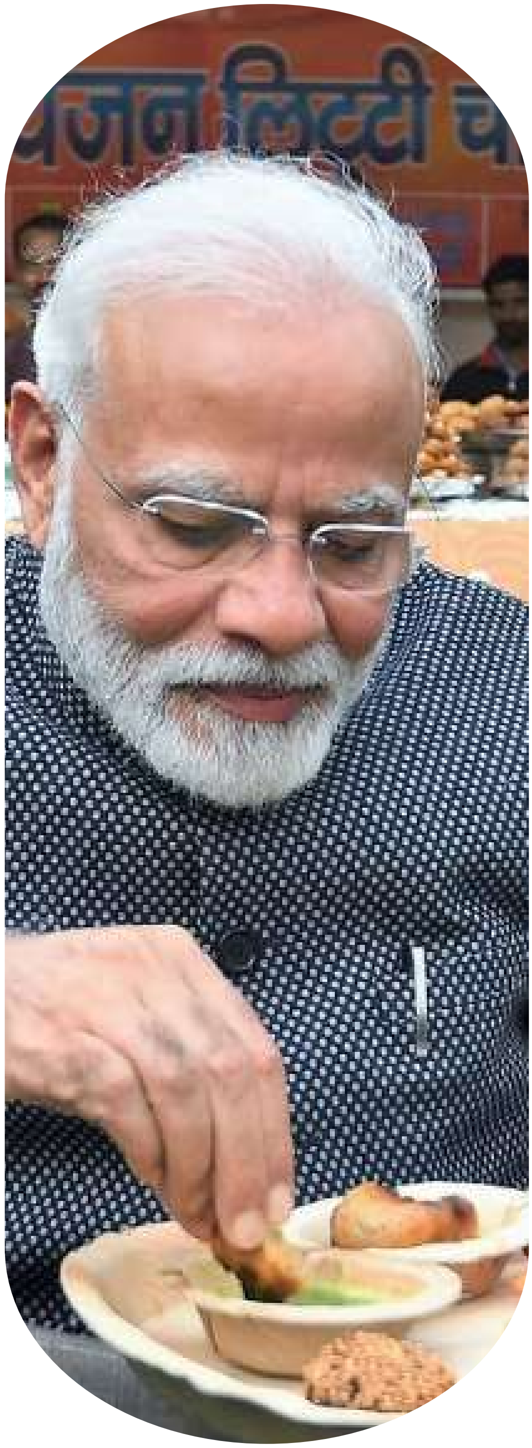

बाटी-चोखा उत्तर भारत, विशेष रूप से बिहार, उत्तर प्रदेश और राजस्थान का एक पारंपरिक व्यंजन है। यह स्वाद, पोषण और सादगी का उत्कृष्ट उदाहरण है। बाटी और चोखा न केवल एक स्वादिष्ट भोजन है, बल्कि यह पोषण से भरपूर और गरीबों के लिए किफायती भोजन भी है।

बाटी-चोखा: क्या है?

बाटी: गेहूं के आटे से बनी गोल रोटियां, जिन्हें आग, तंदूर या ओवन में सेंका जाता है। इसे शुद्ध घी में डुबोकर परोसा जाता है।
चोखा: मसले हुए आलू, बैंगन और टमाटर से बना व्यंजन, जिसमें सरसों का तेल, लहसुन, प्याज और हरी मिर्च मिलाई जाती है।यह व्यंजन सरल, स्वादिष्ट और पूर्ण भोजन का उदाहरण है।

बाटी-चोखा में पोषक तत्व :

बाटी-चोखा न केवल स्वाद में अद्वितीय है, बल्कि यह स्वास्थ्य के लिए भी बहुत फायदेमंद है। इसमें निम्नलिखित पोषक तत्व पाए जाते हैं:

1. बाटी के पोषण तत्व:
गेहूं का आटा: फाइबर, कार्बोहाइड्रेट और प्रोटीन से भरपूर। यह ऊर्जा प्रदान करता है और पाचन तंत्र को स्वस्थ रखता है।
घी: अच्छा बसा स्रोत, जो शरीर को गर्म रखता है और ऊर्जा प्रदान करता है।

2. चोखा के पोषण तत्व:
आलू: ऊर्जा का अच्छा स्रोत। इसमें कार्बोहाइड्रेट और बिटामिन सी होता है।
बैंगन: एंटीऑक्सीडेंट और फाइबर से भरपूर, जो शरीर को हृदय रोगों से बचाता है।
टमाटर: बिटामिन सी और एंटीऑक्सीडेंट का स्रोत, जो प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाता है।
सरसों का तेल: ओमेगा-3 फैटी एसिड और एंटीबैक्टीरियल गुणों से भरपूर।

गरीबों के लिए सस्ता और पौष्टिक विकल्प :

बाटी-चोखा गरीबों के लिए एक आदर्श भोजन है क्योंकि:

1. सस्ता और सुलभ: इसमें उपयोग होने बाली सामग्री जैसे गेहूं का आटा, आलू, बैंगन और टमाटर बाजार में आसानी से और कम कीमत में उपलब्ध हैं।

2. पौष्टिंकता: यह भोजन एक सतुलित आहार है, जिसमें कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन, बिटामिन और फाइबर मौजूद हैं।

3. प्राकृतिक और सरल: यह भोजन बिना किसी महंगे मसाले या प्रसंस्कृत सामग्री के बनाया जाता है, जो इसे स्वास्थ्यबर्धक बनाता है।

4. लंबे समय तक भूख मिटाने बाला: बाटी का उच्च फाइबर और कार्बोहाइड्रेट सामग्री लंबे समय तक पेट भरा हुआ महसूस कराती है।

बाटी-चोखा का सामाजिक और सांस्कृतिक महत्व :

यह व्यंजन भारतीय संस्कृति और पारंपरिक जीवनशैली का हिस्सा है।इसे गरीब और अमीर सभी वर्ग के लोग पसंद करते हैं। शादी, त्योहार और पारिवारिक समारोहों में इसका विशेष महत्व है।

इसलिए बाटी चोखा खायें :

बाटी-चोखा न केवल स्वादिष्ट और पौष्टिक है, बल्कि गरीबों के लिए भी किफायती विकल्प है। यह भोजन सादगी और संतुलन का प्रतीक है, जो पोषण और स्वाद का आदर्श मिश्रण प्रदान करता है। इसे अपनाकर न केवल स्वास्थ्य को बेहतर बनाया जा सकता है, बल्कि समाज के हर वर्ग तक सस्ता और पोषक आहार पहुंचाया जा सकता है।

किशनू झा, मध्यप्रदेश
☎ 8370036068

एक सिली हुई पुस्तक

||संपादक की कलम से||

आपकी यह लघुकथा जीवन की वास्तविकताओं और संघर्षों को बहुत ही सुंदर ढंग से प्रस्तुत करती है। कबीर की कहानी में हमें जीवन की कई सच्चाइयाँ दिखाई देती हैं, जैसे कि निराशा, संघर्ष, और हार न मानने की भावना।

गुज़रते समय के साथ बात गुज़र जाती है । बचपन से लेकर जबानी और जबानी से बुढ़ापे तक के सफर में अनेकों पड़ाब और सैकड़ों ठहराब आते ही हैं। कुछ लोग इन्हें अपने जीबन की घटनायें कहते हैं तो कुछ उतार चढ़ाब । जीबन के रास्ते में आने बाली ये बातें सभी कठिनाइयों ब संघर्षों के ही नाम हैं ।

कहते हैं कि जीना भी एक कला है । हम मनुष्य कलाकार हैं। लेकिन ऐसे कलाकार जिसका अबूझ मदारी है । जिसकी डंडी के डर से हर इशारे को समझना और बैसा ही तमाशा दिखाना हमारी नियति है। सोंच के प्रकार भिन्न है जो कभी न मिटने बाले हैं, न ही बदलने बाले । ऐसे फ़र्क को भी नज़र- अंदाज नही किया जा सकता है। ये बात दीगर है कि सभी अपने तरीके से जीते हैं।

अति पिछड़े कीचड़ से भरे गलियारों बाले गांब का सीधा - सादा छल प्रपंच से कोसों दूर रहने बाला कबीर जो बेहद सरल था । समय के साथ -साथ बह भी अब अपना अच्छा बुरा भी जानने लगा था । उसकी नज़र में देश और उसका कर्तब्य जिसका कद काफी ऊँचा था । होनहार बिरबान के होत चीकने पात की कहाबत को चरितार्थ करता हुआ कबीर शिक्षा के उस आखिरी पायदान पर पहुँच गया था जहाँ से उसके जीबन को नए मायने मिलने को था । मैने पूछ लिया क्या चल रहा है?

" पीएच० डी० पूरी की है । " काशी हिन्दू बिश्वबिद्यालय बाराणसी का बह छात्र जो कभी सिबिल सेबा का सपना देखता था। आज आर्थिक कारणों ने उसे रास्ता बदलने पर मजूबर किया था । जिसका परिणाम डॉक्ट्रेट की डिग्री थी । बाबजूद इसके बह किसी छोटी सरकारी नौकरी के लिए अपना भाग्य आजमाता लेकिन नहीं, बह प्रोफेसर बनने को जाने बाले रास्ते पर मुड़ गया । उसे शायद पता नही था कि सिबिल सेबा से अधिक प्रोफेसर बनने में धांधली और मक्कारी का सामना करना पड़ेगा।

इण्टरब्यू के कठिन प्रश्नों के बीच कुटिल चाले भी थी । भक्तिकाल पर प्रश्न पूछने बाला एक्सपर्ट आज स्त्री शिक्षा पर प्रश्न पूछ रहा था । कबीर ने बराबर जबाब दे दिए थे ।

40 से 50 मिनट के इण्टरव्यू से और प्रश्नों के प्रहारों को झेलकर बाहर निकलने वाला कबीर उम्मीद से उत्साहित था। तभी लंच ब्रेक हो गया था। बाहर गैलरी में निकलते वक्त एक एक्सपर्ट ने तो मुस्कराते हुए बधाई भी दे डाली थी। वह अपने इस साक्षात्कार से उत्साहित भी था और आश्वस्त भी। परन्तु किस्मत का पन्ना पलटने में देर कहाँ लगती है। मेज के नीचे फेंकी गई एक गठरी के झोंके से तेज़ हवा चलने लगी थी, जिससे कबीर के भाग्य की पुस्तक के पन्ने तेजी से फड़फड़ा रहे थे। इस आंधी में महत्वपूर्ण पन्ने फट कर उड़ गए थे। कबीर का रोने को जी चाह रहा था। नतीजा साफ़ था। उसकी किस्मत के पन्ने पर समय की निष्ठुर कालिख पोत दी गई थी। कबीर के पैर कांप रहे थे। उसने यह सोचते हुए बूढ़े माता -पिता का वही एक सहारा है। दिल पर पत्थर रख मन को ढांढस बंधाया और इतिहास में पढ़ी गई पृथ्वीराज चौहान व शहाबुद्दीन गोरी के बीच सत्तरह बार आक्रमण की कहानी की याद ने उसे फिर से ऊर्जावान कर दिया।

माध्यमिक शिक्षा में भी प्रवेश परीक्षा उत्तीर्ण कर चुके कबीर को अपने पर भरोसा था कि वह अपनी ईमानदारी और मेहनत के बलबूते रात -दिन एक करके यह इण्टरव्यू जरूर पास कर लेगा।

कबीर अपने बूढे पिताजी के साथ प्रयागराज स्टेशन पहुँचा था। पास ही दफ्तर में साक्षात्कार की वह घडी भी आ गई। अन्दर बुलावा आया। कमरे में बैठे दो लोगों में से एक ने नाम पूछा और पास में रखी हुई वेरीफिकेशन शीट पर हस्ताक्षर करने को कहा। कबीर ने हस्ताक्षर किए और विनम्रता पूर्वक उनके आदेश का इन्तज़ार करने लगा। करीब आधा घण्टा हो चुका था। उन दोनों ने न तो बैठने को कहा और न ही कोई प्रश्न पूछे। कबीर ने बरबस पूछ लिया था। दूसरा जो वही बैठा था बोला क्यों खड़े हो जाओ। बस हो गया। कबीर ने विनम्रता पूर्वक प्रश्न पूछने का आग्रह किया तो दोनों झुंझला पड़े बोले कह दिया न जाइये हो तो गया। कबीर का दिल तेज़ धड़क रहा था। मन फिर से आशंकित हो चला था माजरा समझते देर न लगी। वह बाहर आ चुका था। उसके कदम इतने भारी हो गए थे कि वह लड़खड़ा रहा था।

कबीर मेरी बातों पर विचार कर रहा था। मैने उससे एक दिन कहा था कि " तुम किसी छोटी-मोटी नौकरी खोजो "

" हाँ देखते है। "

"स्पेशल बी० टी० सी ० की वैकेन्सी निकली है"। मैंने उसे बताया।

उसने सिर्फ सिर हिलाया।

पता नहीं कब उसने बी०टी०सी० में भी बिना कुछ बोले अप्लाई कर दिया था।

आज जब कपड़े पहनकर बाहर जा रहा था।

मैने हालचाल पूछ लिया।

तब उसने बताया कि मेरा नाम आ गया है।

" मेरी ट्रेनिंग लगी है। "

उसकी ट्रेनिंग का आठवां दिन था। आज उसका मुंह उतरा हुआ था।

चेहरे पर थकान और निराशा के बराबर भाव थे।

"क्या हुआ कबीर "

तबीयत तो ठीक है।

आज वह बिना कुछ बोले आगे निकल गया था।

अखबार में खबर छपी थी।

प्रशिक्षण पर रोक लगा दी गई थी।

कबीर ही नहीं उसके जैसे हजारों युबाओं का सपना चकनाचूर हो गया था। जो प्राइबेट नौकरियां छोड़कर आए थे बे अब तो न घर के थे और न घाट के। कबीर भी उनमें से एक था। जो नजरें झुकाये सिर्फ़ मौन था।

उसके जीबन की यही दो घटनायें नहीं थी कई अन्य जगहों पर किसी ने उसकी मासूमियत का पूरा फायदा उठाया तो किसी ने उसकी मजबूरी का। कबीर आज भी ऐसे ही अनुभबों के बीच अपने ईमान की नाब लेकर पार उतरने की कोशिश कर रहा है। अक्सर उसकी किस्मत के पन्ने असमय क्रूर हबाओं द्वारा उलट -पलट दिये जाते हैं लेकिन बह है कि मानता नहीं। बस उन फटे पन्नों को समेट -समेट कर धागे से पुस्तक सिलने की अनबरत कोशिशें कर रहा है।

डॉ० हरिवंश शर्मा
8005002122

बनारसी पान - 2

||संपादक की कलम से||

बताते चले कि इस संस्मरण का पिछला भाग 'बनारसी पान' शीर्षक जुलाई24 अंक में प्रकाशित हुआ था। कृपया पत्रिका पढ़ने/ खरीदने के लिए हमारी आधिकारिक वेबसाईट पर अवलोकन करें।

www.prantiindia.com

बेगमपुरा एक्सप्रेस गाड़ी बनारस रेलबे स्टेशन से उस दिन दो घंटे लेट चली थी। हम दोनों पति पत्नी अपनी अपनी आरक्षित सीटों पर बड़े आराम से बैठ गए थे। दोनों की सीटे एक ही कम्पार्टमैंट में सैकण्ड ए. सी डिब्बे में थी लेकिन एक नीचे बाली सीट थी जब कि दूसरी ऊपर बाली सीट थी। सुषमा ने बड़ी अच्छी तरह से अपना सारा सामान संभाल कर नीचे बाली सीट के नीचे रख लिया था। सीट पर बैठने से पहले उसने अपना हैंड बैग भी संभाल कर अपने पास एक तरफ ऐसे रख लिया था जिस पर किसी की नज़र ना पड़ सके। इसी बैग में हमने अपने सारे ज़रूरी कागजात रखे थे क्योंकि अपने बैग को बह हमेशा अपनी बाजू में बड़े इतियाद से लटकाये रखती थी। बह इसी बैग में जहां अपने पैसे रखती बहां अपना मोबाईल, सनाखती कार्ड, ए . टी. एम कार्ड आदि महत्बपूर्ण चीज़ें भी इसी में रखती थी। उसदिन सोने से पहले मैंने भी अपना ए. टी. एम कार्ड ,आधार कार्ड उसे संभालने के लिए दे दिया था क्योंकि यह नीला बैग हमेशा उसकी बाहों में सुरक्षित रहता था। शाम उतर आई थी। तभी गाड़ी थोड़ी धीरे धीरे चलने लगी थी। थोड़ी देर में गाड़ी लखनऊ रेलबे स्टेशन पर आ कर रुक गई थी। सुषमा के मामा जी यहां फौज में कार्यरत थे। बनारस से चलने से पहले उनसे बातचीत हुई थी। उन्होंने कुछ ज़रूरी सामान पठानकोट भेजना था। उनकी बेटी बबली भागती हुई हमारे पास आई थी। ज़रूरी सामान भी दिया और साथ में रात का खाना भी दे गई। कुछ देर बातें करने के पश्चात बह गाड़ी से नीचे उतर गई। गाड़ी ने हारन दिया और धीमे धीमे चलने लगी थी। थोड़ी देर बह भी साथ साथ चलती रही। गाड़ी तेज़ हो गई और उसने बाहर से हाथ हिला कर हम से बिदा ली। गाड़ी एक बार फिर से सरपट दौड़ने लगी थी।। सुषमा के सामने नीचे बाली सीट खाली थी। कुछ देर तक मैं उस सीट पर बैठा रहा था। लखनऊ स्टेशन पर जब गाड़ी कुछ देर के लिए रुकी थी तो बहुत से नौजबान जो अमरनाथ की यात्रा पर जा रहे थे आ कर बैठ गए थे। उसके सामने खाली बाली सीट पर भी एक नौजबान आकर बैठ गया था। मैंने अब अपनी ऊपर बाली सीट पर जा कर सोना ठीक समझा था। इसलिए ऊपर बाली सीट पर जा कर सो गया था। डिब्बा पूरी तरह से भर गया था। अब मुश्किल से कोई सीट खाली रही होगी। कुछ देर के लिए खूब शोर मचाया था लेकिन जल्दी ही सभी अपनी अपनी सीटों पर बैठ गए थे। गाड़ी पहले धीरे धीरे रेंगने लगी और फिर सरपट दौड़ने लगी

थी। नौजबान क्योंकि धार्मिक यात्रा पर जा रहे थे इसलिए कुछ देर तक खूब धार्मिक गीत गाते रहे। शिब भोले की स्तुति करते रहे। तभी कुछ लोग दूसरे डिब्बे से ढोलक ले कर आ गए और बुलंद आबाज में हर हर महांदेब के नारे लगाने लगे। फिर सभी एक दूसरे के साथ साथ बैठ गए और बाबा भोले नाथ के भजन गाने लगे थे। भजन मंडली ने डोलकी और गीत संगीत से खूब रंग बांध दिया था। यह गीत संगीत का कार्यक्रम रात बारह बजे तक चलता रहा था। डिब्बे में कुछ लोग तो खुश थे जब कि कुछ लोग थक से गए थे। कुछ लोग तो इसे महज शोर शराबा ही समझ रहे थे। यह लोग और मंडली शिब भोले के भक्त थे और अमरनाथ की लंबी यात्रा पर जा रहे थे। सुषमा का इस गीत मंडली के गीत सुन कर मन भाब बिभोर हो रहा था। बह शिब भोले के प्रति इन की आस्था देख कर बहुत खुश थी। उसकी सामने बाली सीट पर बैठा नौजबान ना तो इन नौजबानो की तरह गीत ही गा रहा था और ना ही सो रहा था बल्कि अपने मोबाईल में ब्यस्त था। बह कभी बैठ कर और कभी लेट कर अपने मोबाईल पर अपनी उंगलियां बड़ी तेज़ी से घुमा रहा था। कभी कभी बह किसी तस्बीर को देख कर ज़ोर ज़ोर से हंसने लगता था। जब सभी थक गए तो अपनी अपनी सीटों पर बैठ गए। लेकिन सुषमा के सामने बाली सीट पर बैठा लड़का लगातार अपना मोबाईल देखने में ब्यस्त रहा। अब सभी सो गए थे। कुछ देर सुषमा भी उसके साथ बातचीत करती रही थी। सुषमा ने उस नौजबान से अपना मोबाईल बंद कर अब सोने के लिए बिनय की थी लेकिन उस पर उसकी इस बिनती का कोई असर नहीं हुआ और बह मोबाईल पर लगा रहा। अब मुझे उस पर गुस्सा आ गया था। मैंने भी उसे अब सोने के लिए कहा था लेकिन उसके कानों पर जू तक ना सरकी थी। अब मैंने भी सुषमा को इशारे से अपना बैग संभालने के लिए कहा था। उसने भी मुझे अधिक चिंता ना करने और सो जाने के लिए कहा था। परन्तु मेरे हृदय में अब उसके प्रति शंका उत्पन्न हो चुकी थी। मुझे अब महसूस होने लगा था जैसे उस लडके के मन में चोरी का भाब पैदा हो चुका है। इसलिए मैंने उसे और अधिक सतर्क रहने को कहा था। यह रेल गाड़ी बहुत तेज़ गति से चलती है और बहुत कम स्टेशनो पर रूकती है।

अब रात का बहुत सा हिस्सा बीत चुका था। लगभग तीन बजे के करीब सुषमा को कुछ मिनटों के लिए नीद आ गई थी परन्तु जल्दी ही उस की आँख खुल भी गई थी। आँख खुलते ही उसने इधर उधर देखा। आस पास के सभी लोग अपनी अपनी सीटों पर सो चुके थे। पूरी कम्पार्टमेंट में ख़ामोशी छाई हुई थी। लेकिन बह नौजबान अभी भी जाग रहा था और अपनी सीट पर उकडू सा बन कर अपना मोबाईल देख रहा था। ऐसा सब कुछ देख कर उसने नींद को एक झटके में दूर फैंक कर अपने सिरहाने रखे बैग को टटोला था। लेकिन बैग अपनी जगह पर नहीं था। यह सोच कर कि बैग तो कोई ले गया है, उसने झट से उसे इधर उधर ढूंढना चाहा था। बैग ना मिलने के कारण उसकी एकदम से चीख़ निकल गई थी। उसको ऐसे लगा जैसे सब कुछ थम सा गया हो।

'मेरा बैग कोई उठा कर ले गया है?'बह ज़ोर से चिल्लाई थी। 'बैग अपनी जगह पर ना देख कर उसे लगा जैसे उसके पाँब तले से ज़मीन खिसक गई हो। उसका रंग पीला पड़ गया था। उसकी ज़ोरदार चीख सुन कर मेरे साथ डिब्बे में सोए सभी लोगों की आँख खुल गई थी। मैं उसकी चीख सुन कर झट से उठा और नीचे आ गया था। मैंने सुषमा का सारा सामान उलट पलट कर देखा लेकिन बैग कहीं पर भी नहीं था। अब सब से पहले मैंने सुषमा को डांटा था। सामने बैठा नौजबान अब तक मोबाईल छोड़ कर अपनी जगह पर उठ कर बैठ गया था। उसने भी सारा सामान उलट पलट कर देखा पर बैग कहीं होता तो मिलता। आखिर हमारी शंका ठीक ही निकली। आखिर हम इस लडके चुँगल और नियोयत अभियान में फंस ही गए थे।

'आपको बार बार कहा था कि बैग को बड़े इतियाद से संभाल कर रखना या फिर मुझे ऊपर पकड़ा दो। 'मैंने सुषमा को गुस्से में कहा था।

सुषमा ने अब तक शोर मचा कर डिब्बे में सोए लोगों को जगा दिया था। वह बार बार सभी को पूछ रही थी कि किसी ने उसके बैग को तो नहीं देखा। सामने वाली बर्थ पर लेटा युवक भी अब उनकी तलाशी अभियान में शामिल हो कर बैग ढूंढ़ने लगा था। वह भी बैग को ऐसे ढूंढ रहा था कि किसी को उसकेचेहरे पर शंका ना हो। वह अब हमारी मुश्किल घड़ी में हमारे साथ होने का नाटक कर रहा था। वह बार बार एक ही बात कह रहा था कि आंटी यहां तो कोई आया ही नहीं मैं तो जाग ही रहा था परन्तु सुषमा तो अब भी बार बार यही कह रही थी कि अगर बाहर से कोई नहीं आया त्तो फिर बैग कौन ले गया। बैग चोरी होने में इस लडके का ही हाथ है। उसे उस पर पूरी शंका थी। अब तक डिब्बे के सभी यात्री जाग गए थे। चाहे सभी हमारे साथ हमदर्दी जता रहे थे पर अब उनका ऐसे करने का कोई लाभ नहीं था। .

क्योंकि सुषमा का फोन उसके बैग में था इसलिए मैंने मौका संभालते हुए सुषमा का फोन मिलाया था ताकि पता चल सके कि फोन चल रहा है या बंद। फोन मिलाने पर फोन की घंटी लगातार बजने लगी थी। सामने खड़ा युवक भी हमारी तरफ देख रहा था। मैंने घंटी की आवाज लगातार सुन कर सभी को बताया था कि फोन की घंटी बज रही है इसका मतलब है कि फोन अभी चल रहा है बंद नहीं हुआ। घंटी से उत्तर दे रहा है।' मैंने सुषमा को कहा था

'फोन बज रहा है। मतलब कि अभी फोन बैग में ही है। अभी वह किसी के हाथ नहीं लगा है। चोरी करने वाले को अभी तक उसे बंद करने का मौका नहीं मिल सका है। बैग अभी यही कहीं होगा। उसकी लोकेशन का पता चल सकता है।' मैं थोड़ा और सक्रिय हो गया था। रेल गाड़ी पिछले दो तीन घंटे से कहीं भी रुकी नहीं थी। बैग अभी किसी ने किसी को दिया नहीं है बल्कि अपने पास ही रखा है। आओ,मेरे साथ रेलवे पुलिस को शिकायत करते हैं। मैं उस डिब्बे के एक तरफ खाली सीटों पर बैठे टिकट क्लेकटरज़ के पास पूछने चल पड़ा था कि पुलिस पार्टी कहां मिलेगी। सुषमा और कुछ लोग मेरे साथ चल पडे थे। उसने अपने सामान की देख रेख के लिए किसी को कह दिया था। हम सभी फोन मिला कर डिब्बे के बीचो बीच आगे बढ़ने लगे थे। सुषमा का फोन मैंने मिलाया हुआ था लेकिन आवाज कहीं दूर से आती सुनाई दे रही थी। डिब्बे के आखिर में इकठे बैठे टिकट क्लेक्टर मिल गए थे। उन को मैंने पूरी बात बताई और वो सभी हमारे साथ हो लिए। हमारी पूरी बात सुन कर वे कहने लगे थे - आयो हमारे साथ। रेलवे पुलिस विभाग की एक टुकड़ी हमेशा सवारियों की सुरक्षा के लिए गाड़ी में तैनात रहती है। उनको इस सारी बैग चोरी की घटना के बारे में सूचित करते हैं। मैंने डिब्बे में दो चार कदम आगे बढ़ाते हुए मुख्य टिकट कलेक्टर को कहा ----

'मेरी पत्नी का मोबाईल बैग में है। उसकी घंटी लगातार बज रही है। इसका मतलब है कि बैग अभी किसी ने खोल कर नहीं देखा है। फोन को किसी ने स्विच आफ भी नहीं किया है। बैग रेल गाड़ी में ही किसी के पास है। आप ज़रा जल्दी करें, जब तक गाड़ी नहीं रूकती तब तक तलाश की जा सकती है। 'मेरी बात सुन कर मुख्य टिकट अधिकारी ने मुझे फोन मिलाने को कहा था। मैंने झट से फोन मिलाया था। फोन बजने लगा था। पूरी घंटी बजी थी और फिर बंद हो गई थी। आगे बढ़ते हुए उसने एक बार फिर फोन मिलाने को कहा था। मैंने फोन फिर मिलाया तो घंटी फिर उसी तरह बजने लगी थी। हमने अगले डिब्बे में प्रवेश किया था। घंटी पहले की तरह बज रही थी। सुषमा सहज नहीं हो रही थी। वह बार बार सभी यात्रियों से पूछ रही थी कि किसी ने उसका नीला बैग तो नही देखा। लेकिन कहीं से भी राहत भरी खबर नहीं मिल रही थी। उसकी घबराहट बढ़ती जा रही थी। मैं आगे बढ़ता हुआ फोन मिलाता जा रहा था। हम ने अपना तलाशी अभियान थोड़ा तेज कर दिया था। डिब्बे में बहुत यात्री हमारे साथ हो लिए थे।अचानक फोन की आवाज कहीं नजदीक से ही आती सुनाई देने लगी थी। वह नौजवान भी हमारे साथ ही चल रहा था। मोबाईल की आवाज कहीं नज़दीक से आती सुनकर वह नौजवान थोड़ा घबरा गया था। नजदीक से आती आवाज सुन कर मुख्य कलेक्टर के कान भी खडे हो गए थे। वह फोन की आवाज सुन कर रुक गए थे। वही एक तरफ टाइलेट्स थे। उन्हें लगा कि

जैसे आबाज टाईलेंट्स से ही आ रही हो। सभी के हृदय में एक आस की किरण जगी थी। उन्होंने मुझे एक बार फिर फोन लगाने को कहा था। आबाज बिल्कुल पास से ही आ रही थी। अब उनको बिश्वास हो गया था कि आबाज टाईलेंट्स से ही आ रही है। मुख्य टिकट कलेक्टर ने टाइलेट का दरबाजा खटखटाया था। दरबाजा अंदर से बंद था। दो तीन बार खट खटाने के बाद एक नौजबान टाइलेट की चिटकनी खोल कर बाहर निकला था। बह बहुत घबराया और डरा हुआ था। बह अपने रुमाल से हाथ साफ कर रहा था। मुख्य कलेक्टर ने उसे अपने पास खड़ा कर लिया था। मैंने एक बार फिर फोन लगाया था। फोन पहले की तरह बज रहा था और आबाज भी पहले की तरह ही आ रही थी। टाइलेट में इधर उधर देखने के बाद मैंने टाइलेट में एक कोने मे पडे डस्टबिन को भी देखा था। बैग डस्टबिन में ही पड़ा था और फोन भी बज रहा था। आबाज भी बहीं से आ रही थी। एक अजीब तरह की हैरानी सारे लोगों में फ़ैल गई थी। सभी को टाइलेट से निकले उस जबान पर बैग चुराने और बहां रखने का शक़्क हो गया था। अब मुख्य टिकट कलेक्टर ने इस नौजबान से बैग बारे पूछा था परन्तु बह उस से अनभिज्ञ होने की बात करने लगा था। बह कहने लगा ---

क्या मेरे मुँह पर लिखा है कि मैंने बैग चोरी कर डस्टबिन में रखा है। मेरी बैठने की सीट तो इस डिब्बे में है। मैं तो उस डिब्बे में गया ही नहीं।

मैं तो स्बयं टाइलेट के डस्टबिन में से मोबाइल की आती आबाज सुन कर बहुत डर गया था। मैंने सोचा कहीं कोई यहाँ बम्म तो नहीं रख गया। देखो मेरी कमीज पसीने से गीली हो गई है।' 'उसने अपनी पसीने से लथपथ हुई कमीज़ मुख्य टिकट कलेक्टर और पास खडे लोगों को दिखाई थी। फिर भी उसके आसपास खडे यात्रियों की तीखी नज़र उस के चेहरे पर टिकी रही थी। मुख्य टिकट कलेक्टर को उसकी बात सुन कर हंसी आ गई थी और बाकी लोग भी उसकी तरफ देखने लग पडे थे। उसकी बात पर किसी को भी यक़ीन नहीं हुआ। फिर कलेक्टर ने डस्टबिन में से बैग निकाला और कहा कि 'यही बैग है आप का?'देखिए, अपना सामान चैक करिए। .

बैग में सामान बैसे का बैसे था। सभी स्तबध से देखते रहे थे। एक प्रतिरोध की ज्बाला टिकट कलेक्टर के हृदय में जगी थी लेकिन झट से उसने उसे थूक दिया था। फिर उसने आसपास खडे लोगों की तरफ देखा और कहने लगा ---' संसार में अनेकों प्रकार के लोग आपको धोखा दे सकते हैं। कई प्रकार के लोग भिन्न भिन्न प्रकार के ढंग अपना कर आप को ठक सकते है।फिर भी मुझे लगता है कि आज नहीं तो कल उस नौजबान का बुरा बक़्त आने बाला है। चोर जो भी होगा आज हमारे हाथों से बच गया है लेकिन किसी ने कहा है ना सौ दिन चोर के और एक दिन साध का। कभी ना कभी जरूर ही पकड़ा जाएगा। 'मुख्य टिकट कलेक्टर पहले परेशान था लेकिन बैग मिलने के पश्चात उसके चेहरे पर ख़ुशी की लहर दौड़ गई थी। उसने अब सुषमा की तरफ देख कर कहा था --'-बेटा अब खुश हो ना।'

'खुश तो हूँ सर लेकिन चोर का पता तो जरूर ही चलना चाहिए। खिड़कियां दरबाजे बंद, रेल गाड़ी दो तीन घंटे से रुकी नहीं फिर भी कोई बैग उठा कर ले गया। इसकी तफसीश भी जरूर होनी चाहिए। ताकि किसी और यात्री के साथ ऐसा ना हो।'अधैर्य का एक क्षुबध गुबार उसके हृदय के भीतर उठा था और सुषमा ने हाँफ्ते हुए हुंकार भरी थी और अपने साथ बाली सीट पर बैठे लडके और टाइलेट से बाहर आए लड़के की तरफ देख कर कहा था।

मुख्य टिकट कलेक्टर ने उसकी मंशा को पहचान लिया था फिर भी मेरे कंधे पर हाथ रख कर ऊपर डिब्बे की छत की तरफ देखा और अपनी यादों के समंदर में एक गहरी डुबकी लगाई थी। फिर उस लडके की तरफ देख कर कहने लगा -

'बरखुरदार! तुम्हारा क्या कसूर? कोई ऊपर से आया और बैग उठा कर इस टाइलेट के डस्टबिन में रख गया। 'मुख्य टिकट कलेक्टर ने ब्यंग्य करते हुए उस लडके को कहा था। फिर उसने अपनी बात आगे बढ़ाते हुए कहा,'मुझे भारतीय रेलबे में काम करते लगभग चालीस बर्ष बीत गए हैं। कोयले के साथ चलने बाली ट्रेन से मैंने अपना नौकरी का सफ़र तय किया था।

आज डीज़ल और बिजली से ट्रेन चलने लगी है। अनेक उतार चढ़ाव हमने देखें हैं। रेलवे में होती अनेकों चोरियां भी होती हमने देखी हैं लेकिन चोरी हुआ बैग अथवा पर्स वापिस उसके मालिक को मिल जाए ऐसा होता हमने पहली बार अपनी आँखों से देखा है। यह घटना हमारे हृदय में अजीब से सवाल पैदा कर रही है। फिर वह हमारी तरफ देख कर कहने लगा 'मुझे लगता है कि आप सच पर पहरा देने वाले लोग हो। आप की कमाई ख़ून पसीने की कमाई है जो आप का चोरी हुआ बैग मिल गया। 'वह कहता जा रहा था और बाकी सारे लोग चुपचाप सुनते जा रहे थे। उसकी बात सुनकर घेरा डाल कर और अपनी आँखें गड़ा कर देख रहे यात्रियों में गहरा सन्नाटा छा गया था। इसने उनके चेहरो पर भी ढेरों सवाल खडे कर दिए थे। सुषमा भी अब तक सहज हो गई थी। फिर सुषमा और मैंने उनकी इस मुश्किल घड़ी में धीरज़ और संयम रख कर उनका गुम बैग ढूंढ़ने में सहायता करने के लिए हृदय की गहराइयों से धन्यवाद किया था। उसकी आवाज अब थोड़ी धीमी पड़ गई थी। उसकी आँखें नम हो गई थीं। सुषमा भावुक हो गई थी। रेल गाड़ीकी गति अब थोड़ी धीरे होने लगी थी। अगला स्टेशन आने वाला था। सभी अब तक अपनी अपनी सीटों पर जा कर बैठ गए थे। इस स्टेशन पर उतरने वाले अपना सामान समेटने लगे थे। सुषमा के सामने बैठा नौजवान भी अब अपना सामान संभालने लग गया था। उसके हाथ पैर काँपने लगे थे। जुबान जैसे तालु के साथ चिपक गई हो। उसकी नज़रें झुकी हुई थीं। रेल गाड़ी कांटे बदलती, आगे पीछे झूलती,लड़खड़ाती धीरे धीरे स्टेशन पर आ कर ख़डी हो गई हो। हमें अजीब सी ठंडक महसूस होने लगी है।

डॉ० लेखराज, पंजाब

☎ 9464425912

साहित्यिक
मासिक पत्रिका

प्रान्ति इंडिया का वार्षिक सब्सक्रिप्शन

~~MRP ₹2500~~

आपके घर पर मात्र ₹1100 में

एक साल में 12 पत्रिकाएं

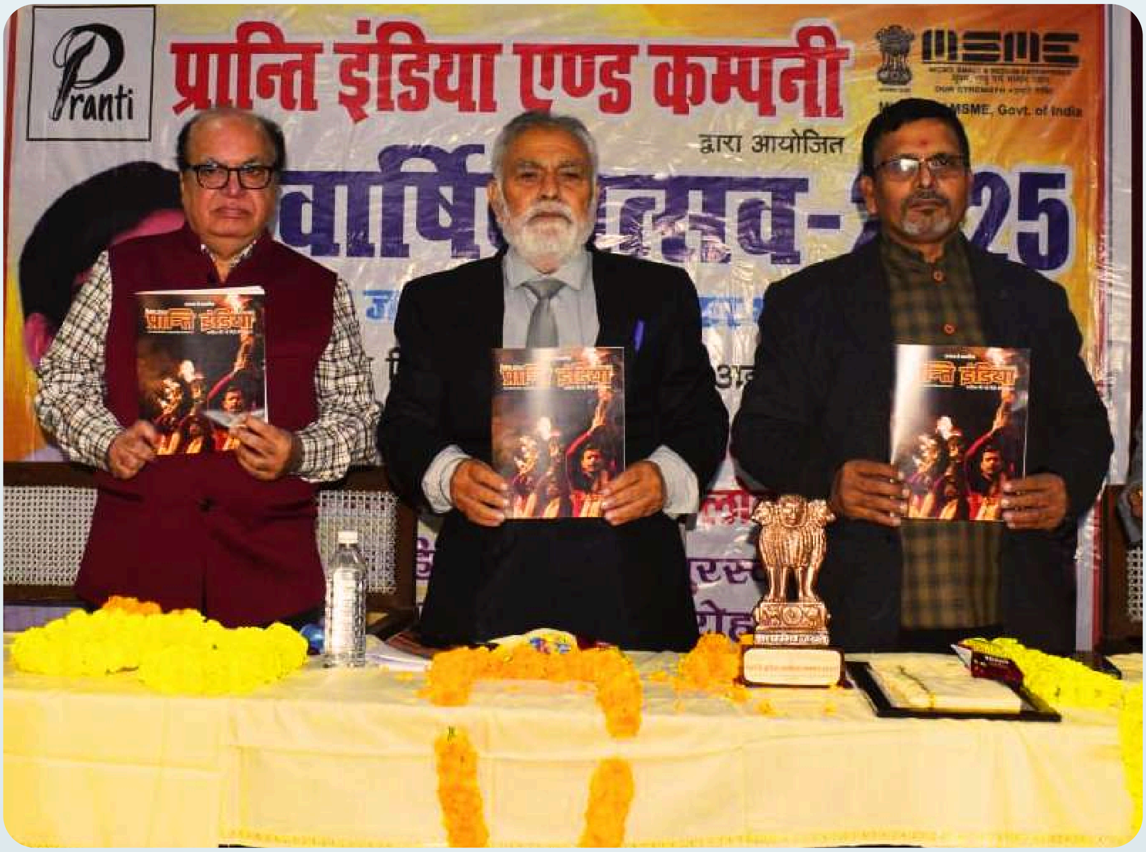

☎ +91 94535 35495

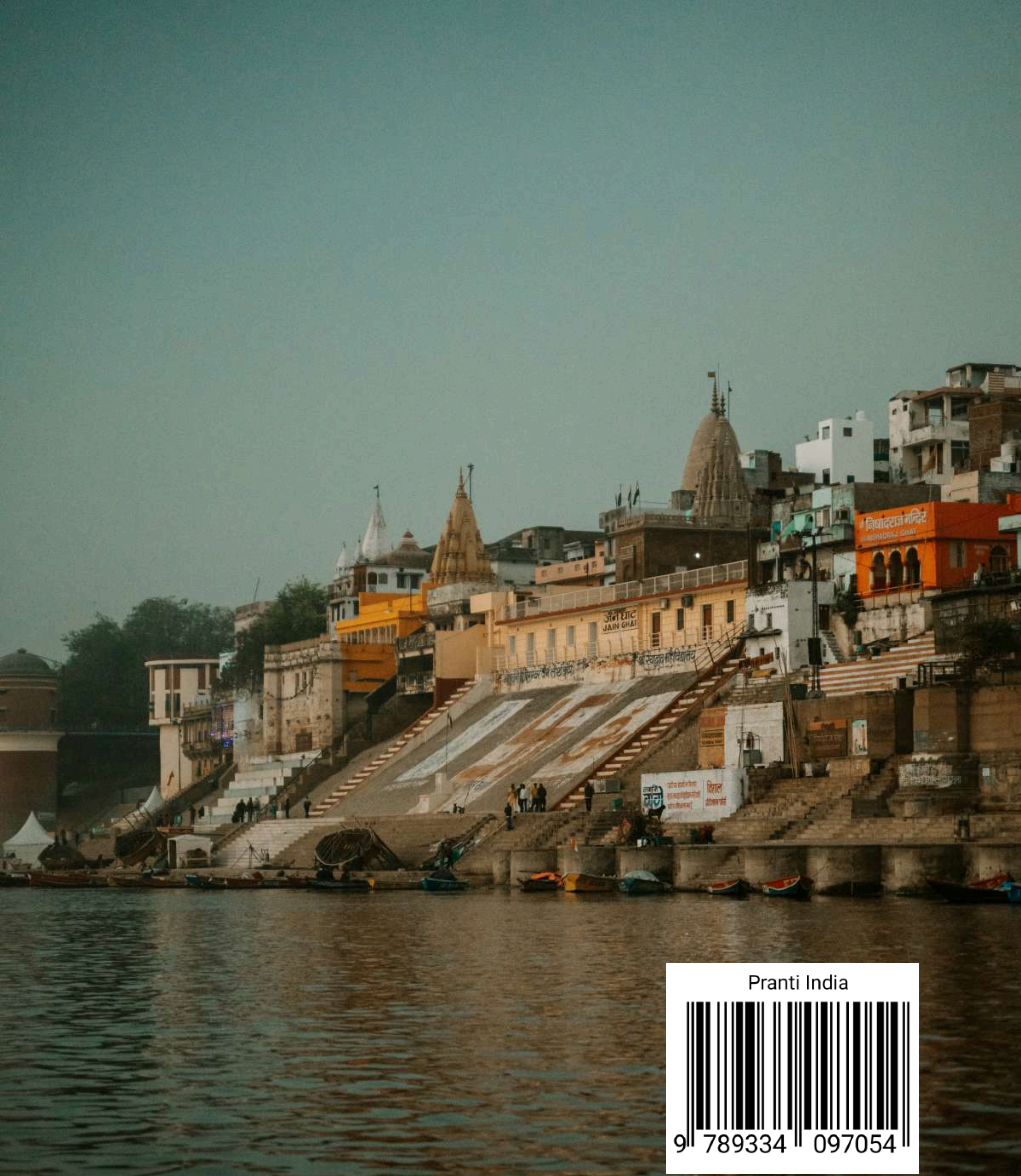

Pranti India
9 789334 097054

प्रान्ति इंडिया एण्ड कम्पनी के लिए संपादक/प्रकाशक ए. के. प्रसाद द्वारा जे11/125 ए-1, ईश्वरगंगी, वाराणसी - 221001 से प्रकाशित।